भोजपुरी भाषा अंक 2

संक्षिप्त भोजपुरी व्याकरण

शब्द विचार

पिछलका खण्ड में हमनी का भोजपुरी वर्णमाला आ वर्णन का बारे में जनलीं जा। एह खण्ड में भोजपुरी का शब्दन पर विचार होखी।

कवनो भाषा अपना शब्दन से पहिचान में आवेले। जिअतार भाषा दोसरा भाषा का शब्दन के आसानी से पचा लेबेले आ अपना में आत्मसात कर लेले। अँगरेजी से बड़हन एकर नमूना अउर कतहीं ना मिली।

एक भा अधिका ध्वनियन का मेल से अक्षर बनेला आ एक भा अधिका अक्षरन का मेल से शब्द बनेला। अउर जरुरी होला कि ओ अक्षर समूह के कवनो मतलब निकले। बिना अर्थ के शब्द ना होले, ध्वनिमात्र होले। हालांकि निरर्थक शब्द भी खूब स्तेमाल होलन। बाकिर व्याकरण में सार्थके शब्दन पर विचार होला, निरर्थक पर ना।

<u>शब्दांश</u> ओह वर्ण-समूहन के कहाला जवना के आपन त कवनो अर्थ ना होला बाकिर जब ऊ कवनो दोसरा शब्द से जुटेलें त सार्थक हो जालें। अइसनका शब्दांशन के चार गो भेद होला -

1. कारक चिह्न - के, का, से, में
2. क्रिया प्रत्यय - ता, ती, इहन, लन
3. उपसर्ग - प्र, परा, अप
4. प्रत्यय - ता, पन, आइल

<u>शब्द के भेद</u> -

शब्द मूल रूप से दू तरह के होला -

1. प्रतिपदिक
2. धातु

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आ अव्यय प्रतिपदिक के आ क्रिया धातु के रूप ह।

एही भेद के विचार व्याकरण में होला। वइसे त शब्दन के कई तरह से भेद कइल जाला -

<u>आगम का अनुसार</u> - कवनो शब्द कहवाँ से आइल बा, एकरा अनुसार ऊ तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशज होला।

<u>बनावट का अनुसार -</u>

रूढ़ - जब कवनो शब्द के मतलब कवनो खास अर्थ में मान लीहल होखे त ओह शब्दन के रूढ़ शब्द कहाला। रूढ़ शब्दन के खण्डके कवनो अर्थ ना निकले। जइसे - आम, गदहा, घोड़ा।

यौगिक - जब शब्द के खण्ड के भी कवनो अर्थ निकले त ऊ यौगिक शब्द कहाला। जइसे कि विद्‌या+आलय - विद्‌यालय।

योगरूढ़ - ओइसनका यौगिक शब्द जवना के कवनो खासे अर्थ होला ऊ योगरूढ़ कहाला। जइसे - पंकज पांक में जनमेवाला हर चीज के ना, खाली कमल के कहाला।

<u>प्रयोग का अनुसार</u> व्याकरण-सम्मत शब्द-भेद -

1. विकारी - जवना शब्द में लिंग, वचन, काल, कारक वगैरह का अनुसार बदलाव भा विकार आ जाव ऊ विकारी शब्द होलन। प्रतिपदिक में कुछ विकारी आ कुछ अविकारी होला। धातु सब विकारी होला।जइसे -

संज्ञा - राम, विद्‌यालय, आम, मिठास।

सर्वनाम - हम, तूं, ऊ।

विशेषण - उज्जर, गोर, करिया, मीठ, ढीठ।

क्रिया - खाइल, चलल, पढ़ल, उठल।

2. अविकारी - जवना शब्दन में लिंग, वचन, काल, कारक वगैरह का अनुसार बदलाव भा विकार ना आवे ऊ अविकारी शब्द होला। प्रतिपदिक शब्दन के उपभेद अव्यय अविकारी होला। जइसे -

क्रियाविशेषण - अब, निगचा, जल्दी-जल्दी, बहुत

सम्बन्धबोधक - पहिले, पाछे, जरिये, मारफत, खिलाफ, एवज।

सम्मुच्चयादिबोधक - अउर,बलुक, बाकिर, एहीसे।

विस्मयादिबोधक - अरे बाप, हाय-हाय।

<u>उपयोग का अनुसार -</u>

सामान्य शब्द - आम उपयोग वाला शब्द जइसे पानी, सूरज, आम, महुआ, घर। ई शब्द रोज का जिनगी में खूब स्तेमाल होलन स।

तकनीकी शब्द - ज्ञान-विज्ञान, व्यवसाय वगैरह

में काम आवे वाला पारिभाषिक शब्द जइसे रेखा, त्रिभुज, आयताकार, शिरा, धमनी, मज्जा।

अर्द्ध-तकनीकी शब्द - एह शब्दन के उपयोग आम बोलचाल आ तकनीकी प्रयोग दूनू में होला। जइसे - खून-जाँच, हीमोग्लोबीन, आरक्षण, बम, आपरेशन।

कवनो भाषा के शब्द भण्डार स्थायी ना होखे। समय का साथ कुछ शब्द व्यवहार से हटला का बाद मर जालें त कुछ नया शब्द हमेशा जुटत रहेला। मोबाइल आवे का पहिले मोबाइल के मतलब रहे कवनो चलन्त जाँच दल। आज मोबाइल के मतलब मोबाइल फोन सेट सभ केहू बूझ ली। ओइसहीं टीवी, मेट्रो-रेल, सेटेलाइट आजुकाल्ह सबका समुझ के शब्द हो गइल बा। कवनो भाषा के शब्द यदि आपन जरुरत पूरा करत होखे आ ओकरा बदले कवनो आसान शब्द अपना भाषा में ना होखे त ओह शब्द के अपना लिहले में चाल्हाकी बा।

संज्ञा

कवनो प्राणी, वस्तु, जगह, भा भाव के नाम के संज्ञा कहल जाला। संज्ञा प्रतिपदिक शब्द ह। एकरा में लिंग, वचन, काल, कारक वगैरह का चलते विकार आवेला एहसे ई विकारी भी ह।

संज्ञा शब्द खास क के दू तरह के होला - 1. पदार्थवाचक आ 2. भाववाचक।

पदार्थवाचक शब्द के चार उपभेद होला -

1. व्यक्तिवाचक, 2. जातिवाचक, 3. द्रव्यवाचक, आ 4. समूहवाचक।

भाववाचक शब्द तीन तरह के होला -

1. गुणवाचक, 2. अवस्थावाचक, आ 3. क्रियार्थक।

<u>व्यक्तिवाचक संज्ञा</u> - अइसन शब्द जवना से कवनो खास आदमी, जगह, भा वस्तु के भान हो खे। उदाहरण - तुलसीदास, अटलबिहारी, ताजमहल, अयोध्या, मक्का, गंगा।

<u>जातिवाचक संज्ञा</u> - अइसन शब्द जवना से एक तरह के सभ आदमी, जगह, भा वस्तु के भान हो खे। ई गिनल जा सकेला एहसे एकरा के सां ख्येयपदार्थवाचक भी कहल जा सकेला। उदाहरण - कवि, नेता, भवन, शहर, गाँव, नदी।

<u>द्रव्यवाचक संज्ञा</u> - अइसन शब्द जवना से ओह पदार्थन के बोध हो जवना से कवनो वस्तु बनल बा। एह पदार्थन के नापल, तोलल, भा मापल जा सकेला। उदाहरण - लोहा, चाँदी, घी, तेल, पानी, चीनी।

<u>समूहवाचक संज्ञा</u> - अइसन शब्द जवना से कवनो समूह के ज्ञान होखे। उदाहरण - सेना, संसद, विधान-सभा, भीड़, टोली, पुस्तकालय।

<u>गुणवाचक संज्ञा</u> - जवना से कवनो चीज, जगहा भा जीव के गुण-दोष के ज्ञान होखे। जइसे - मिठास, विद्वता, सौन्दर्य, सरलता, खटास।

<u>अवस्थावाचक संज्ञा</u> - जवना से कवनो जीव, जगह, भा वस्तु के भावना के भान होखे। जइसे - खीस, प्रेम, सूखा।

<u>क्रियार्थक संज्ञा</u> - जवना शब्द से कवनो क्रिया के अर्थ निकलत होखे - जइसे सूतल, उठल,

बइठल, दउड़ल।

ध्यान दीं - व्यक्तिवाचक आ भाववाचक संज्ञा अधिकतर एकवचन में प्रयुक्त होला जबकि जातिवाचक संज्ञा एकवचन आ बहुवचन दूनू में।

कई हाली जातिवाचक संज्ञा व्यक्तिवाचक संज्ञा का रूप में स्तेमाल होला। जइसे - 'पण्डितजी देशके समाजवादी राह पर चलवलन।' एह वाक्य में पण्डितजी से मतलब जवाहरलाल नेहरू से बा, पण्डित लोग से ना।

एहीतरे कबो-कबो व्यक्तिवाचक संज्ञा के जातिवाचक रूप में भी स्तेमाल होला। जइसे कि - 'एहू युग में सीता के कमी नइखे, कमी बा त राम आ लक्ष्मण के।' एह वाक्य में सीता के मतलब उनका लेखा औरतन से बा जे पतिव्रता आ धर्मपरायण होखे। आ राम के मतलब एकपत्नीव्रती मरद लोग से बा। लक्ष्मणो से मतलब लखनलाल से ना उनुका लेखा ब्रह्मचारी युवकन से बा।

भाववाचक संज्ञा शब्दन के रचना -

कुछ भाववाचक शब्द त स्वतन्त्र होला, जइसे - साँच, झूठ, बुद्धि, क्षमा - कुछ के दोसरा शब्दन से बनावल जाला। जइसे -

जातिवाचक संज्ञा से - लरिकपन, दोस्ताना, दुश्मनागत।

क्रिया से - चढ़ाई, चाल, ढाल, सजावट।

विशेषण से - चतुराई, बेवकूफी, मिठास, खटास।

सर्वनाम से - ममत्व, अपनापन, सर्वस्व, अहंकार।

अव्यय से - नजदीकी, दूरी।

लिंग

लिंग के मतलब ह निशान भा चिन्हासी। बाकिर रूढ़ से ई मरद भा मेहरारू के चिह्नासी हो गइल बा। लिंगे से तय होला कि के मरद ह, के मेहरारू। भोजपुरी में हिन्दी लेखा दूइये गो लिंग होला। नपुंसक लिंग संस्कृत आ अंगरेजी में होला।

मरद जाति के बोध करावे वाला शब्द पुलिंग कहाला आ मेहरारू जाति के बोध करावेवाला शब्दन के स्त्रीलिंग कहाला।

कुछ शब्द खाली पुलिंग होलें, कुछ खाली स्त्रीलिंग। कुछ पुलिंग शब्दन में आ, ई, ऊ, ति, आनी, आइन, इया, उली, इन, की, री, नी वगैरह प्रत्यय जोड़ के स्त्रीलिंग बना लीहल जाला।

कुछ शब्द दूनू तरह से बेवहार में लीहल जाला। अइसनका अधिकतर शब्द कवनो पद के नाम होला। उदाहरण - प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति। एके अर्थ राखे वाला दू गो शब्दन में से कभी एगो पुलिंग त दोसरका स्त्रीलिंग होला। जइसे पुस्तक त स्त्रीलिंग ह जबकि ग्रन्थ पुलिंग ह।

कुछ शब्द के एके लिंग होला दोसरका लिंग वाला शब्द ओकरा से ना बने। जइसे बाप, ससुर, बैल वगैरह। वइसहीं कुछ शब्द स्वतन्त्र स्त्रीलिंग होला, ओकर पुलिंग रूप ना बने। जइसे - महतारी, पतोह, जनता।

अधिकतर पुलिंग शब्दन में कवनो प्रत्यय जोड़ के स्त्रीलिंग बनावल जाला। उदाहरण -

अन्तिम स्वर के 'आ' करके -

प्रथम - प्रथमा	सदस्य - सदस्या
शिष्य - शिष्या	

अन्तिम स्वर के 'ई' करके -

पुत्र - पुत्री	बेटा - बेटी
चाचा - चाची	देव - देवी

'अनी' प्रत्यय जोड़ के -

देवर - देवरानी	जेठ - जेठानी
भव - भवानी	मास्टर - मास्टरनी

'इया' प्रत्यय का बेवहार से -

लोटा - लुटिया	पुल - पुलिया
चूहा - चुहिया	बिटवा - बिटिया

<u>'उली' प्रत्यय से</u> -

गाछ - गछुली टीका - टिकुली

रुपया - रुपल्ली

<u>'इन' जोड़ के</u> -

दुलहा - दुलहिन हजाम - हजामिन

धोबी - धोबिन कहार - कहारिन

<u>'आइन' प्रत्यय के स्तेमाल कर के</u> -

डाक्टर - डाक्टराइन, डाक्टर के औरत

मास्टर - मास्टराइन, मास्टर के औरत

दूबे - दुबाइन

चौबे - चौबाइन

<u>'आन' के 'अति' कर के</u> -

भगवान - भगवति बुद्धिमान - बुद्धिमति

<u>'अक' के 'इका' कर के</u> -

पाठक - पाठिका चालक - चालिका

अध्यापक - अध्यापिका

कवनो स्त्रीसूचक शब्द जोड़ के -

पुत्र - पुत्रवधू नगर - नगरवधू

कुछ स्त्रीलिंग शब्दन से भी पुलिंग बनावल जाला। उदाहरण -

मौसी - मौसा फूफी - फुफा

जीजी - जीजा बहिन - बहिनोई

ननद - ननदोई सिकड़ी - सिक्कड़

रोटी - रोट चिट्ठि - चिट्ठा

कुछ शब्द अधिकतर पुलिंग होला -

पहाड़न के नाम, हिन्दी महीना आ दिनन के नाम, देश, अधिकतर ग्रह-नक्षत्रन के नाम , धातु पदार्थ, तरल पदार्थन के नाम, आउर अ,इ,उ,त्र,न,ण, ख,ज,र से अन्त होखे वाला शब्द।

कुछ शब्द अधिकतर स्त्रीलिंग होला -

नदिअन के नाम, किराना सामानन के नाम, भाषा आ बोलिअन के नाम, आउर आ,इ,ई,उ,ऊ,त,ता,हट, वट,आई से अन्त होखे वाला शब्द।

लिंग का चलते खाली संज्ञा शब्दने में विकार आवेला। सर्वनाम में लिंग विकार ना आवे। ऊ या त स्त्रीलिंग होखी भा पुलिंग। विशेषण शब्दन में भी लिंग रूपान्तर ना मिले।

वचन

प्रतिपदिक शब्दन जइसे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, आ क्रिया के जवना रूप से संख्या के बोध होखे ओकरा के वचन कहल जाला।

<u>वचन दू तरह के होला - एकवचन, आ बहुवचन।</u>

जब कवनो शब्द से एकेगो पदार्थ भा जीव के बोध होखे त ऊ एकवचन शब्द होला, जइसे - लरिका, घोड़ा, टेबुल।

<u>एकवचन शब्द मूल रूप में होलें।</u> उनुका में कवनो प्रत्यय ना लागे। माने कि बिना प्रत्यय के मूल प्रतिपदिक हमेशा एकवचन होला। ओकरा के बहुवचन बनावे खातिर ओहमें कवनो प्रत्यय जोड़े के पड़ेला, चाहे ओकरा संगे कवनो बहुवचन बोधक स्वतन्त्र शब्द लगावल जाला।

भोजपुरी में बहुवचन बोधक प्रत्यय बस एके गो बा - 'अन'। एही 'अन' के कई गो रूप होला - अनि, अन्हि, अन्ह, वनि, वन्हि, वन, वन्ह। उदाहरण -

लरिका - लरिकवन।

किताब - किताबन, कितबिअन।

<u>ध्यान देबे लायक बात</u> -

1. शब्द के आखिरी आ के अ हो जाला।

कपड़ा - कपड़न भा कपड़वन

2. बीच में आइल आ जस के तस रहेला।

सोनार - सोनारन

बिलार - बिलारन

बजाज - बजाजन

3. आखिरी इ भा ई के इय् हो जाला। माने कि ई के बदले भी इ हो जाला।

हाथी - हथियन

साथी - सथियन

मुनि - मुनियन

4. आखिरी उ भा ऊ के उव् हो जाला। एहुजा ऊ के उ हो जाला।

डाकू - डकुवन

चाकू - चकुवन

साधु - सधुवन

बहुवचन बोधक शब्द जइसे सभ, स, सगरी, कुल्ही, ढेरे, लोग, बहुते वगैरह के स्तेमाल भी कइल जाला। उदाहरण -

सभ लरिका, सभ भा सगरे किताब, कुल्ह टेबल, विद्यार्थी सभ भा विद्यार्थी स।

कारक

कारक आठ तरह के होला - 1. कर्त्ता, 2. कर्म, 3. करण, 4. सम्प्रदान, 5. अपादान, 6. सम्बन्ध, 7. अधिकरण, आ 8. सम्बोधन।

कारक कवनो शब्द के क्रिया भा दोसरा शब्दन से संबंध बतावेला। अलग-अलग कारक खातिर अलग-अलग विभक्ति लागेला। कर्त्ता के संगे कवनो विभक्ति ना लागे। कबो कबो कर्म का संगे भी कवनो विभक्ति ना लागे। उदाहरण -

युद्ध-भूमि में राम अपना तरकस से निकाल धनुष पर चढ़ाके लंका के राजा रावण के तीर मरलन।

एह वाक्य में मुख्य क्रिया बा मारल आ ओह क्रिया के करेवाला बाड़न राम। एहसे राम कर्त्ता भइलन। एहमें राम का साथे कवनो विभक्ति नइखे लागल।

1. संज्ञा भा सर्वनाम के जवना रूप से क्रिया करेवाला का बोध होखे ओकरा के कर्त्ता कहल जाला। कर्त्ता के संगे भोजपुरी में कवनो विभक्ति ना लागे। हिन्दी में कबो-कबो ने विभक्ति के प्रयोग होला।

भोजपुरी में कर्त्ता दू तरह के होला - जे स्वतन्त्र बा, कुछ करे के भा ना करे के, ऊ <u>प्रयोजक कर्त्ता</u> ह, आ जे दोसरा के प्रभाव से कुछ करे ऊ <u>प्रयोज्य कर्त्ता</u> ह। उदाहरण -

मास्टर लड़िकन से लेख लिखवावत बाड़े। एह वाक्य में मास्टर प्रयोजक कर्त्ता बा आ लड़िका प्रयोज्य कर्त्ता।

2. जवना पदार्थ भा जीव पर क्रिया के फल पड़ेला ऊ कर्म कहाला। एकर विभक्ति चिह्न के ह। कबो-कबो विभक्ति चिह्न ना लगाके कर्म में ए जुट जाला। एकरा के संश्लिष्टता कहाला।

केकरा के मरलन ? रावण के। एहीजा रावण कर्म बा।

3. जवना साधन से क्रिया कइल जाव ऊ करण

कहाला। एकर विभक्ति चिह्न से भा संश्लिष्ट ए ह।

उपरका उदाहरण वाक्य में कवना चीज से मरलन ? तीर से। एहसे तीर करण भइल।

4. जेकरा के कुछ दिआव भा जेकरा खातिर कुछ कइल जाव ओकरा के सम्प्रदान कहाला। एकर विभक्ति चिह्न के, संश्लिष्ट ए, ला, बास्ते, खातिर, लागि, बदे होला। उदाहरण देखीं –

हम अपना माई खातिर दवाई ले जात बानी।

एह वाक्य में माई सम्प्रदान बा।

5. संज्ञा भा सर्वनाम के जवना रूप से अलगाव-बिलगाव के बोध होखे ओकरा के अपादान कहाला। एकर विभक्ति चिह्न से होला।

'तरकस से तीर निकाल' – एह वाक्य में तरकस अपादान बा आ से ओकर विभक्ति चिह्न।

अपादान कारक के स्तेमाल दोसरो तरह से होला –

जवना समय से कवनो काम शुरु होखे, जइसे काल्ह से क्रिकेट मैच होखी।

कवनो तरह के तुलना करे में, जइसे भारत में अमेरिका से अधिका आबादी बा।

जेकरा से कुछ भेंटात होखे, जइसे लरिका मास्टर से पढ़ेले।

जहवाँ कवनो भाव प्रकट होखे, जइसे दुलहिन बुढ़ऊ से लजात बाड़ी। हम साँप से डेरात बानी।

जहवाँ गत्यार्थक क्रिया के स्तेमाल होखे, जइसे गते-गते चलऽ। नेताजी आजुवे आवे के कहले रहन।

6. जब एगो संज्ञा भा सर्वनाम के संबंध दोसरका संज्ञा भा सर्वनाम से बुझाव त ऊ सम्बन्ध कहाला। एकर विभक्ति चिह्न के, कर, र, का होला।

'लंका के राजा' में लंका के सम्बन्ध कारक कहाई।

7. जवना से क्रिया करे के स्थान, काल, भा भाव के बोध होखे ओकरा के अधिकरण कहाला। कहवाँ मरलन? युद्ध-भूमि में। ईहवाँ युद्ध-भूमि अधिकरण हो गइल।

अधिकरण तीन तरह के होला। 1. स्थानाधिकरण, 2. कालाधिकरण, आ 3. भावाधिकरण। जहवाँ क्रिया होखे ऊ स्थानाधिकरण कहाला। जइसे हम घर में पढ़ब। एह वाक्य में पढ़ला के जगह घर भइल। जवना से कवना घरी के जबाब मिले ऊ कालाधिकरण होला। जइसे हम भोरे पढ़ब। ईहवाँ भोरे काल बतावता एहसे ई कालाधिकरण भइल। आ जवना से क्रिया के भाव मालूम होखे ऊ भावाधिकरण कहाला। जइसे तहरा करे में डर नइखे त हमरा कहला में का डर बा? एह वाक्य मे कहल क्रिया के भावरूप के प्रयोग बा।

अधिकरण के विभक्ति चिह्न में, पर, पे, भा संश्लिष्ट ए होला। बाकिर कबो-कबो भा अकसरहाँ दोसरो विभक्ति शब्दन के प्रयोग होला। जइसे –

का आगे, का पाछे, के अन्दर, के बहरी, वगैरह।

8. जवना से केहू के बोलावल जाव भा पुकारल जाव ओकरा के सम्बोधन कारक कहाला। एकर विभक्ति चिह्न ए, ऐ, हे, हो, रे होला।

भोजपुरी में एकवचन आ बहुवचन दूनू में एके तरह के विभक्ति लागेला। लिंगोभेद से एकरा पर अन्तर ना पड़े। नमूना नीचे बा –

संज्ञा शब्दन के रूपावली

अकारान्त पुलिंग – जवान

कारक	शब्दरूप
कर्ता	जवान, जवनवा
कर्म	जवान के, जवाने
करण	जवान से
सम्प्रदान	जवान ला/के/वास्ते/बदे/के/जवाने
अपादान	जवान से
सम्बन्ध	जवान के
अधिकरण	जवान पर
सम्बोधन	हे/ए/ऐ/रे जवान

अकारान्त स्त्रीलिंग - पतोह

कारक	शब्दरूप
कर्ता	पतोह, पतोहिया
कर्म	पतोह के, पतोहे
करण	पतोह से
सम्प्रदान	पतोह ला/के/वास्ते/बदे/के/जवाने
अपादान	पतोह से
सम्बन्ध	पतोह के
अधिकरण	पतोह पर
सम्बोधन	हे/ए/ऐ/रे पतोह

सर्वनाम

संज्ञा के बदला भा अेकरा जगहा स्तेमाल होखे वाला शब्दन के सर्वनाम कहाला।

सर्वनाम के तीन गो भेद होला -

उत्तम पुरुष - जवना शब्द के बेवहार बोलेवाला भा लिखेवाला अपना खातिर करेला ऊ उत्तम पुरुष कहाला। भोजपुरी में एकरा खातिर एके गो शब्द बा हम। बहुवचन खातिर हम के हमनि क दिआला। हिन्दी के मैं का बदला भोजपुरी में हम कहाला आ हिन्दी का हम का जगहा भोजपुरी में हमनि होला।

मध्यम पुरुष - जवनासे श्रोता भा पाठकके सम्बोधित कइल जाव ऊ मध्यम पुरुष कहाला। मध्यम पुरुष के उपभेद तीनगो होला -

सामान्य मध्यम पुरुष - तूं

आदरसूचक मध्यम पुरुष - रउरा, राँवा, रउवा।

अनादर भा प्रेम सूचक मध्यम पुरुष - तें, तोरा, तोहरा।

अन्य पुरुष - जवना शब्द के बोले भा लिखे वाला श्रोता भा पाठक के छोड़के दोसरा खातिर बेवहार करेला ऊ अन्य पुरुष कहाला। एकर उपभेद नीचे दिआता -

निकटस्थ निश्चयवाचक अन्य पुरुष - ई, ईहाँका, ईहँवा, हई।

दूरस्थ निश्चयवाचक अन्य पुरुष - ऊ, उहाँका, उँहवा, हऊ।

अनिश्चयवाचक अन्य पुरुष - सभ, केहु, कवनो, कुछ, किछ, अमुक।

प्रश्नवाचक अन्य पुरुष - के, कथी, का, कहँवा, केकर, कवन।

सम्बन्धवाचक अन्य पुरुष - जे, से।

ध्यान दीं - लिंग का आधार पर सर्वनामन में विकार ना आवे। वचन आ कारक के आधार पर विकार आवेला। संज्ञा शब्दन का साथ विभक्ति अलगा से लिखाला जोड़के ना। बाकिर सर्वनाम के विभक्ति जोड़िये के लिखाला।

विशेषण

जे कवनो वस्तु भा जीवके खासियत बतावे ओकरा के विशेषण कहाला। ई खासियत अच्छाई भा बुराई, गिनती, नाप, भा माप वगैरह कुछुवो हो सकेला।

विशेषण जेकर विशेषता बतावे ओकराके विशेष्य कहाला। जइसे - करिआ घोड़ा में करिआ विशेषण आ घोड़ा विशेष्य बा।

जवन शब्द विशेषण के विशेषता बतावे ओकरा के प्रविशेषण कहल जाला। जइसे - ढेर गरम में ढेर शब्द गरम के विशेषता बतावता। एहिजा ढेर प्रविशेषण भईल।

कवनो वाक्य में विशेषण के स्तेमाल दू तरह से होला - 1. विशेष्य-विशेषण, आ 2. विधेय-विशेषण। विशेषण जब कवनो शब्द के पहिले आवेला त ऊ विशेष्य-विशेषण कहाला। विशेषण जब विशेष्य आ क्रिया के बीच में आवेला त ऊ विधेय-विशेषण कहाला।

विशेषण के खास भेद तीन गो होला -

1. गुणवाचक, 2. मात्रावाचक, आ 3. सार्वनामिक।

गुणवाचक विशेषण - जवना विशेषण से कवनो व्यक्ति भा वस्तु के गुण-दोष, आकार-प्रकार, रंग-रूप, रस-गन्ध, स्पर्श, अवस्था, स्थान-स्थिति वगैरह के आभास होखे ओकरा के गुणवाचक विशेषण कहाला। एकर उपभेद कईगो होला -

गुणबोधक - दानी, सत्यवादी, नीमन, भल, सुशील वगैरह।

दोषबोधक - कंजूस, गुण्डा, झूट्ठा, खराब, बेहाया, पतित वगैरह।

कालबोधक - पुरान, नया, दैनिक, मासिक, साप्ताहिक, सालाना, पखवारी, छमाही वगैरह।

दिशाबोधक - पूरबिया, पछुआ, दखिनवारी, उतरवारी वगैरह।

रंगबोधक - ऊजर, करिया, लाल, पिअर, सबुज, धानी, जमुनिया, रानी, मैरून, बूलू, आसमानी वगैरह।

रसबोधक - मीठ, तीत, खट्टा, नुनगर वगैरह।

गन्धबोधक - महकदार, बदबूदार, सोन्ह, मादक वगैरह।

स्पर्शबोधक - मुलायम, टाँठ, कड़ा, नरम, बज्जर, चिम्मर, गुलगुल वगैरह।

स्थानबोधक - पटनहिया, छपरहिया, गोरखपुरिहा, भोजपुरिहा, रसियन, विलायती, जवारी, पनिया, अगिया वगैरह।

अवस्थाबोधक - सुखल, भींजल, गरम, ठण्ढा, भूँजल, छानल, बघारल, अमीर, गरीब, बेमार, निरोग, बिगड़ल वगैरह।

आकारबोधक - गोल, चौकोर, तिकोनिया, नाट, लमहर, विशाल वगैरह।

भावबोधक - खुश, नाराज, खिसिआइल, अउँजाइल, ठकुआइल, निनिआइल वगैरह।

आयुबोधक - लरिका, बूढ़, जवान, सतवाँस, अठवाँस वगैरह।

अइसनका ढेरे भेद-उपभेद दीहल जा सकेला। बाकिर एह सबके एके गो भेद - गुणवाचक विशेषण - में राखल ज्यादा बेहतर रही। काहेकि ई सभ गुणे-दोष नू हऽ।

मात्रावाचक विशेषण - जवना विशेषण से कवनो जीव भा पदार्थ के संख्या भा परिमाण के पता चले ओकरा के मात्रावाचक विशेषण कहर जाला। ई दू तरह के होला - 1. संख्यावाचक, आ 2. परिमाणवाचक।

संख्यावाचक विशेषण के दू गो भेद होला - 1. अनिश्चित, आ 2. निश्चित।

जवना संख्यावाचक विशेषण से संख्या निश्चित ना हो सके ऊ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहाला। जइसे - ढेर, पचीसन, अनगिनत, थोड़, सात-आठ।

जवनासे संख्याके पता साफ-साफ मालूम होखे ओह विशेषण के निश्चितसंख्यावाचक विशेषण कहाला। ई कई तरह के होला -

पूर्णांकबोधक संख्याविशेषण - जवनासे पूरा संख्या के बोध होला ऊ पूर्णांकबोधक संख्याविशेषण कहाला। पूर्ण अंक नव गो होला। शून्य के अस्तित्व अकेले ना होला। ओही नव गो पूर्णांक आ शून्य का मेल से सगरी संख्या बनेली स।

एक, दू, तीन, चार, पाँच, छव, सात, आठ,

नव, दस, बीस, तीस, चालिस, पचास, साठ, सत्तर, अस्सी, नब्बे, सई भा सौ।

एकरा उपर के संख्या दूगो संख्या मिलाके बनेला। एकसौ के नीचे तक पहिले छोटका संख्या आ बाद में बड़का संख्या लिखल भा बोलल जाला।

एक आ दस ऍगारह, दू आ दस बारह, तीन आ दस तेरह, चार आ दस चउदह, पाँच आ दस पनरह, छव आ दस सोलह, सात आ दस सतरह, आठ आ दस अठारह। बाकिर नव आ दस नवारह ना अनईस - एक कम बीस - कहाला।

एही तरह एक आ बीस ऍकईस, एक आ तीस ऍकतीस, एक आ चालिस ऍकतालिस, एक आ पचास ऍकावन, एक आ साठ ऍकसठ, एक आ सत्तर ऍकहत्तर, एक आ अस्सी ऍकासी, एक आ नब्बे ऍकान्बे, एक आ सै एक सौ एक।

एही तरह दू आ बीस बाईस, दू आ तीस बत्तीस, दू आ चालिस बयालिस, दू आ पचास बावन, दू आ साठ बासठ, दू आ सत्तर बहत्तर, दू आ अस्सी बयासी, दू आ नब्बे बानबे, दू आ सै एक सौ दू ।

तीन खातिर तेइस, तैंतीस, तैंतालिस, तिरपन, तिरसठ, तिहत्तर, तिरासी, आ तिरानबे होला।

चार खातिर चउबीस भा चौबिस, चौंतिस, चउवालिस, चउवन, चउसठ, चउहत्तर, चउरासी, आ चउरानबे होला।

पाँच खातिर पचीस, पैंतीस, पैतालिस, पचपन, पैसठ, पचहत्तर, पचासी, आ पँचानबे होला।

छव का संगे छब्बीस, छत्तीस, छियालिस, छप्पन, छाछठ भा छियासठ, छिहत्तर, छियासी, आ छियानबे होला।

सात बदे सताईस, सैंतीस, सैंतालिस, संतावन, सड़सठ, सतहत्तर, सत्तासी, आ संतानबे होला।

आठ के लेके अठाईस, अड़तीस, अड़तालिस, अंठावन, अड़सठ, अठहत्तर, अट्ठासी, आ अंठानबे होला।

नव का जोड़ में ध्यान दिहल जरुरी बा। ई अगला दहाई से एक कम - उन भा अन - कहाला। उनतीस, उनचालिस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर, उनासी, बाकिर अपवाद में उनसई ना निनानबे कहाला।

एक सौ से ऊपर का संख्यामें सबसे बड़ संख्या सबसे पहिले, ओकरा से छोट ओकरा बाद, आ सबले छोट सबका बाद कहाला। उदाहरण -

एक खरब दू अरब तीन करोड़ चार लाख एक हजार छह सई एक। अंक में लिखाव तऽ लिखाई -

1,02,03,04,01,601

एगारह खरब एगारह अरब एगारह करोड़ एगारह लाख एगारह हजार एक सई एगारह। अंक में लिखाव तऽ लिखाई -

11,11,11,11,11,111

भोजपुरी मे बड़का संख्या में अर्धविराम खरब का बाद, अरब का बाद, करोड़ का बाद, लाख का बाद, आ हजार का बाद लागेला। अंगरेजी में ट्रिलियन का बाद, बिलियन का बाद, मिलियन का बाद, आ थाउजेन्ड का बाद लागेला। एकर कारण संख्यन के वर्गीकरण बा। भोजपुरी में दस सौ के एक हजार, सौ हजार के एक लाख, सौ लाख के एक करोड़, सौ करोड़ के एक अरब, आ सौ अरब के एक खरब होला। अंगरेजी में हजार हजार के एक मिलियन, हजार मिलियन के एक बिलियन, आ हजार बिलियन के एक ट्रिलियन होला।

कविता गीत भा पद्य में अंक में ना लिखाव शब्द में लिखाला। लेखन में अंक भा शब्द दूनू में से कवनो एक भा दूनो में लिखल जा सकेला।

एक के बेवहार कबो-कबो अनिश्चयार्थक रूप में, तुलना में समान खातिर, भा अवधारणा का रूप में भी होला। जइसे - एक दिन के बाति ह, राम आ श्याम एके लेखा बुझालें, एगो तूही नइख नू ?

<u>अपूर्णांकबोधक संख्याविशेषण</u> - पाव 0.25, आधा 0.5, पौन 0.75, सवा 1.25, डेढ़ 1.5, अढ़ाई 2.5 जईसन शब्दन के अपूर्णांक बोधक संख्याविशेषण कहल जाला। काहेकि एहनि से कवनो अपूर्ण अंक के पता चलेला। भोजपुरी में अउँचा 3.5, ढउँचा 4.5, पउँचा 5.5, खोंचा 6.5, सतोंचा 7.5 जईसन शब्दो भेंटालें। बाकिर एकनी का जगहा साढ़े तीन, साढ़े चार, साढ़े पाँच, साढ़े छव, साढ़े सात लिखल ठीक रही।

एक बटा दू 1/2, सात बटा नव 7/9 में बटा के मतलब ह भागा। माने एक में दू से भाग दीं त एक बटा दू, सात में नव से भाग दीं त सात बटा नव जईसन अपूर्ण संख्या मिली।

पाव के मतलब एक बटा चार, आधा एक बटा दू, आ पौन तीन बटा चार भईल।

एक का संगे एक पाव अउरी मिला दीं त ऊ हो जाई सवा एक। मतलब कि जब खाली एक बटा चार होखे त पाव आ जब कवनो पूर्णांक से ज्यादा बढ़के होखे त सवा।

एही तरे डेढ़ होला। एक से कम बा त आधा बाकिर एक आ आधा मिल के होखी डेढ़। दू आ एक बटा दू मिलाके अढ़ाई, तीन आ एक बटा दू मिला के साढ़े तीन। दू का उपर आधा खतिर साढ़े के स्तेमाल होला।

एही तरे पौन जब अकेले होखी, माने तीन बटा चार त खाली पौन कहाई। बाकिर जब कवनो पूर्णांक से पहिले आई त ओकर मतलब होखी ओह पूर्णांक से एक बटा चार कम। पौने दू के मतलब भईल एक आ तीन चौथाई 1.75 भा दू से पाव कम। एही तरे पौने तीन के मतलब दू आ तीन चौथाई 2.75 भा तीन से पाव 0.25 कम।

<u>क्रमबोधक संख्याविशेषण</u> - जवना शब्द से क्रम के पता चले ओकरा के क्रमबोधक संख्या विशेषण कहाला।

क्रम में सबसे पहिले आवे त पहिला भा पहिलका, ओकरा बाद दूसर, दोसर भा दोसरका, तीसर भा तीसरका, चउथा भा चउथका, पाँचवा, छठवाँ, सतवाँ, अठवाँ, नउवाँ, दसवाँ, एगारहवाँ, बारहवाँ, वगैरह। कहे के मतलब कि ओह संख्या का साथे का भा वाँ जोड़ दीहल जाला।

हिन्दी तिथियन के नाम में तनी बदलाव आ जाला -

हर महीना में दुगो पख भा पक्ष होला - अन्हरिया आ अँजोरिया भा कृष्णपक्ष आ शुक्लपक्ष। हर पख के पहिला दिन परिवा भा प्रतिपदा, दोसरका दूज भा द्विितिया, तीसरका तीज भा तृतीया, आ एही क्रम से चउथ भा चौठ भा चतुर्थी, पंचमी, छठ भा खष्ठी, सतमी भा सप्तमी, अठमी भा अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, दुआरसी भा द्वादशी, तेरस भा त्रयोदशी, चतुरदसी भा चतुर्दशी आवेला। कृष्णपक्ष के आखिरी दिन अमावस भा अमावस्या कहाला आ अँजोरिया के आखिरी दिन पूरनिमा भा पूर्णिमा कहाला।

<u>समुदायबोधक संख्याविशेषण</u> - जवना शब्द से एक से अधिका के समुदाय के बोध होखे ओकरा के समुदायबोधक संख्याविशेषण कहाला।

एकसे समुदाय ना बने तबो केहू अकेलहीं समाज बने त ओकरा के असगरे कहाला। असगरे माने अकेले। असगरे के समुदायबोधक मानल जा सकेला।

दू के समुदाय जोड़ा, चार के गंडा, पाँच के गाही, दस के दहाई, बारह के दर्जन, सोलह से सोरही भा सोरहा, बीस के कोड़ी, आ चउबिस से जिस्ता बनेला।

<u>आवृतिबोधक संख्याविशेषण</u> - जवना से कवनो फ्रेक्वेन्सी, आवृति भा बारम्बारता के बोध होखे ओकरा के आवृतिबोधक संख्याविशेषण कहल जाला। एकरा मे बेर, बेरा, हाली शब्दन के भी प्रयोग खूब होला। जइसे एकबार भा एकहरा भा एक हाली। ...हरा परत के अर्थ में लीहल जाला। एकहरा, दोहरा, तिहरा, आ चउहरा माने कवनो चीज के एक परत, दू परत, तीन परत, आ चार परत।

<u>वीप्सार्थक संख्याविशेषण</u> - जवना शब्द से कवनो आवृति के बारम्बारता प्रकट होखे ओके व्यापकताबोधक भा वीप्सार्थक संख्याविशेषण कहाला।

एक के व्यापकता होखे त प्रति, हरेक, हर के प्रयोग होला। बाकी संख्यन खातिर ओह शब्दन के द्विवत्व क दिआला। जइसे - एक-एक घंटा पर, दू-दू मिनट पर, सात-सात दिन पर। संयुक्त संख्या रहला पर बाद वाली छोटकी संख्या के द्वित्व होला। जइसे - एकसौ पाँच-पाँच आदमी का बाद मतलब कि हर एक सौ पाँच आदमी के बाद।

<u>परिमाणवाचक विशेषण</u> - कुछ पदार्थन के गिनल ना जा सके, नापल तौलल भा मापल जा सकेला। कबो-कबो गिने लायक सामान भी माप तौल के बतावल जाला। जइसे आम गिनिओ के बूचाला आ जोखियो के। अईसनका पदार्थन के नाप तौल भा माप बतावेवाला विशेषण के परिमाणवाचक विशेषण कहल जाला। ईहो दू तरह के होला - 1. निश्चित परिमाणवाचक आ 2. अनिश्चित परिमाणवाचक।

निश्चित परिमाणवाचक - जवना से कवनो पदार्थ के परिमाण के निश्चित विवरण मिलो ओकरा के निश्चित परिमाणवाचक कहल जाला। अक्सरहाँ अइसनका शब्दन का पहिले कवनो संख्यावाचक शब्द जरुर रहेला। जइसे - पाँच लीटर घीव, सात किलो भूँजा, चार गज कपड़ा, दू कट्ठा जमीन। कबो-कबो माप तौल भा नाप का बाद भर जोड़ के कहल जाला - गज भर माने एक गज, किलो भर माने एक किलो, बाल्टी भर माने एक बाल्टी भर के, कटोरी भर माने एक कटोरी भर के वगैरह।

अनिश्चित परिमाणवाचक - जवना परिमाणवाचक विशेषण से परिमाण के अन्दाजेभर मिले ओकरा के अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहाला। जइसे अपार कष्ट, ढेर दूध, अधिका दाल, इचका भर सेनूर, तनिका जोरन वगैरह।

तुलनात्मक विशेषण - अनिश्चित परिमाणवाचक शब्द से जब कवनो वस्तु भा जीव के तुलना दोसरा से कइल जाव ओकरा के तुलनात्मक विशेषण कहाला। जइसे - अधिका, अनइस, बीस, कम।

सार्वनामिक विशेषण - जब कवनो सर्वनाम के बेवहार विशेषण का रूप में कइल जाव त ऊ सार्वनामिक विशेषण कहाला। ई कई तरह के होला -

1. संकेतवाचक - ई, ऊ, कहाँ, कहँवा, के, कवन, कवना, केहू, का।

2. प्रकारवाचक - अइसन, ओइसन, जइसन, तइसन, कइसन, अपने लेखा, उनका लेखा, केकरा भा किनका लेखा।

3. मात्रावाचक - अतना, ततना, जतना, कतना।

4. सम्बन्धवाचक - हमार, तहार, तोहर, उनकर, इनकर, सभकर।

ध्यान दीं - जब कवनो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहिले कहल भा लिखल जाव त ऊ सार्वनामिक विशेषण होखी बाकिर जब ऊ संज्ञा का बदला बोलाव भा लिखाव त ऊ सर्वनाम कहाई। उदाहरण -

ई घोड़ा तेज दउड़ेला। ई - विशेषण

ई हमार संघतिया ह। ई - सर्वनाम

विशेषण शब्दन के रचना - कुछ विशेषण मोलिक होलें, आ कुछ के रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया भा अव्यय शब्दन में कवनो प्रत्यय लगाके कइल जाला।

1. इक प्रत्यय लगाके -

मास - मासिक	पक्ष - पाक्षिक
अर्थ - आर्थिक	दैव - दैविक
सम्प्रदाय - साम्प्रदायिक	मर्म - मार्मिक
सेना - सैनिक	नीति - नैतिक

ध्यान दीं - जब इक प्रत्यय लागेला तब शुरुके ह्रस्व स्वर दीर्घ में बदल जाला। जब दूगो शब्द रहेला त दूनूके आदि स्वरन में बढ़न्ती हो जाला - पर+लोक - परलोक, परलोक+इक - पारलौकिक।

मगर ई वृद्धि हमेशा ना होला। उदाहरण - श्रम - श्रमिक, क्रम - क्रमिक।

2. इत प्रत्यय लगाके -

सुगन्ध - सुगन्धित	मोह - मोहित
दण्ड - दण्डित	संचय - संचित
द्रव - द्रवित	अपमान - अपमानित

3. इम प्रत्यय जोड़के -

आदि - आदिम	अन्त - अन्तिम

4. ई लगाके -

सुख - सुखी	क्रोध - क्रोधी
गाँव - गँवई	जवार - जवारी

5. ईय जोड़के -

मानव - मानवीय	भारत - भारतीय

6. अक लगाके -

मद - मादक	मोह - मोहक

7. इल लगाके -

धूम - धूमिल	चोट - चोटिल

8. ईन जोड़के -

रंग - रंगीन	ग्राम - ग्रामीण

9. ईला जोड़के -

खर्च - खर्चीला	चमक - चमकीला

अइसहीं निष्ठ, नीय, मान्, मती, मय, य, रत, वान्, वती, शाली, वी, एरा, वाला, शील, आ, आलु, इयाह, गर, छाह, दार, अल, आक, आउ, आका, आड़ी, आड़ा, इया, क, अक्कड़, ओड़,

ओड़ा, हुआ, कर, अर, सा, सी, ला वगैरह ढेरे प्रत्यय बाड़ी स जवना के जोड़के विशेषण शब्दन के रचना कइल जाला।

एकरा अलावे ढेरे उपसर्गो बाड़ी स जवना के कवनो शब्द का आगा लगाके विशेषण बनावल जाला -

1. अ जोड़के - अयोग्य, अबर, अक्षम
2. नि जोड़के - निरोग, निसन्तान, निरपराध
3. दुः लगाके - दुर्जन, दुसाध्य, दुबर
4. स लगाके - सपूत, सफल, सहज
5. क लगाके - कपूत, कलह
6. बे जोड़के - बेजोड़, बेहिचक, बेहोश।
7. ला लगाके - लावारिस, लाइलाज, लापता।

कुछ जगहन पर विशेषण शब्दन के प्रयोग संज्ञा का तरह भी होला - लईकन से छोह कर। गद्दार गरियावल जाले। बहादुर पूजाले। गुरू के बात ध्यान से सुनेके चाहीं।

विशेषण विशेष्य के विशेषता बतावेला। ई विशेषता केहू में दोसरा से अधिका त केहू में सबले अधिका पावल जा सकेला। ई बात खाली गुणवाचक, अनिश्चितसंख्यावाचक आ अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषणन में पावल जाला। एह तुलनात्मक अन्तर के बतावे खातिर भोजपुरी में कवनो व्यवस्था नइखे। बाकिर तत्सम भा शुद्ध हिन्दी शब्दन में तर आ तम प्रत्यय लगाके क्रमसे उत्तरावस्था आ उत्तमावस्था बना लिहल जाला। चाहे अधिक आ सबसे अधिक प्रविशेषण जोड़के भी एह कामके कइल जा सकेला।

एह खण्ड में इहँवे तक। अगिला अंक में क्रिया, अव्यय आ बाकी बातन के चर्चा होखी।

आपन प्रतिक्रिया जरूर भेजीं सभे।

- प्रकाशक